JIFF JFM Day 4 (20 Jan) HINDI and English Press Release

This release includes Interview/s

**हिन्दी सिनेमा खतरे में है, रीज़नल सिनेमा नहीं – तिग्मांशु धूलिया**

**सिनेमा के ज़रिए करता हूं समाज को कुछ अच्छा देने की कोशिश - राकेश ओमप्रकाश मेहरा**

**महिला निर्देशकों के प्रति भेदभाव रखती है फिल्म इंडस्ट्री - पाखी ए. टायरवाला**

**वी शान्ताराम के फैंस के लिए दिखाई गई मशहूर फिल्म*पड़ौसी***

**आज शाम 5 बजे आइनॉक्स - जी.टी.सेन्ट्रल में होगी क्लोज़िंग अवॉर्ड सेरेमनी**

जयपुर। जयपुर इंटरनेशनल फिल्म फेस्टिवल [जिफ] 2020 के तीसरे दिन कई अहम् मुद्दों पर संवाद हुआ, वहीं फिल्मों का लगातार प्रदर्शन हुआ। फिल्मप्रेमियों ने समारोह का बहुत आनन्द लिया।

दोपहर 12 से 1:30 बजे **रीज़नल सिनेमा ऑफ इंडिया – टुडे एंड टुमॉरो, डाइवर्सिटी ऑफ इंडिया – रिफ्लेक्शन इन इंडियन सिनेमा**सैशन हुआ। यहां *गैंग्स ऑफ वासेपुर* और *पान सिंह तोमर* के डायरेक्टर और राइटर **तिग्मांशु धूलिया**, *बाला* के लेखक **निरेन भट्ट**, *लाल कप्तान* के लेखक **दीपक वेंकटेशन** और **इंद्रनील घोष** ने हिस्सा लिया। वहीं, फिल्म मेकर **गजेन्द्र क्षोत्रिय** मॉडरेटर रहे।

**हिन्दी सिनेमा खतरे में है, रीज़नल सिनेमा नहीं – तिग्मांशु धूलिया**

सत्र में क्षेत्रीय सिनेमा, ख़ास कर राजस्थानी और हिन्दी सिनेमा में आने वाली चुनौतियों के बारे में चर्चा की गई। सत्र में **तिग्मांशु धूलिया** ने साफ़गोई से कहा कि हिन्दी सिनेमा खतरे में है, क्षेत्रीय सिनेमा नहीं। चूंकि क्षेत्रीय सिनेमा जड़ों से जुड़ा हुआ है, वह कभी बाहर नहीं होगा। वहीं, चुटकी लेते हुए धूलिया ने यह भी कहा कि जिस तरह फिल्मों में गालियों की भरमार आ पड़ी है, उसकी ज़रुरत नहीं है। क्षेत्रीय भाषाओं और बोलियों का अपना रंग और लहजा होता है, और गालियों की जरूरत है ही नहीं।

*तारक मेहता का उल्टा चश्मा* जैसा शो लिख चुके **नीरेन भट्ट** ने कहा कि बॉलीवुड खिंचड़ी की तरह होता जा रहा है, जबकि रीज़नल कहानियां कम बन रही हैं। वहीं, सत्र में सभी वक्ताओं ने यह भी कहा कि डिजिटल प्लेटफॉर्म और वेब सीरीज़ के दौर में नई कहानियों को ज्यादा स्पेस और आजादी मिलेगी। ऐसे प्लेटफॉर्म फिल्म निर्माताओं को बेहतर सिनेमा बनाने के लिए ज्यादा प्रेरित करेंगे।

**सिनेमा के ज़रिए करता हूं समाज को कुछ अच्छा देने की कोशिश - राकेश ओमप्रकाश मेहरा**

इसी कड़ी में आगे एक महत्वपूर्ण सत्र भी हुआ – **सिनेमा ऑफ चेंज**, जिसमें जाने – माने फिल्म निर्देशक **राकेश ओम प्रकाश मेहरा** ने दर्शकों से संवाद किया। फिल्म समीक्षक **विनोद भारद्वाज** ने मेहरा से फिल्मों से जुड़े कई सवाल किए।

*दिल्ली 6, रंग दे बसंती और भाग मिल्खा भाग* जैसी बड़ी फिल्में बना चुके **राकेश ओमप्रकाश मेहरा** ने साफ कहा कि पाकिस्तान – हिन्दुस्तान और साम्प्रदायिक मसले बहुत हो चुके हैं, और अब हमें इससे आगे बढ़कर सोचना चाहिए। मेहरा ने कहा कि बचपन से विभाजन की दर्दनाक कहानियां सुनने के बाद उन पर इसका गहरा असर हुआ, और यह उनकी फिल्मों में भी कमोबेश दिखाई देता है। साथ ही मेहरा ने यह भी कहा कि बचपन में वी.शान्ताराम की फिल्म *दो आंखें बारह हाथ* देखने से वे अच्छा सिनेमा बनाने के लिए प्रभावित हुए। बातचीत में मेहरा ने अपनी आने वाली फिल्म *उड़ान* के बारे में भी बताया।

**महिला निर्देशकों के प्रति भेदभाव रखती है फिल्म इंडस्ट्री - पाखी ए. टायरवाला**

3 बजे **वर्ड सिनेमा बाय विमन** सैशन आयोजित हुआ, जिसमें *गुड न्यूज* फिल्म की राइटर **ज्योति कपूर**, डायरेक्टर, सिनेमेटोग्राफर और *मुम्बई टॉकीज* की फाउंडर **सीमा देसाई**, **तेजपाल सिंह धामा,** जानी – मानी राइटर और डायरेक्टर **पाखी ए. टायरवाला** और अर्मिनिया की फिल्म मेकर **मैरिना लिबिक** ने अपनी बात रखी, वहीं वरिष्ठ पत्रकार **प्रेरणा साहनी** ने मॉडरेटर की भूमिका निभाई।

सत्र की शुरुआत में ही **पाखी ए. टायरवाला** ने खुलकर कहा कि फिल्म इंडस्ट्री महिला निर्देशकों के प्रति भेदभाव भरा रवैया रखती है, और इस इंडस्ट्री में बने रहने के लिए उन्हें दोगुना काम करने की जरुरत है। महिला फिल्म मेकर्स को उनकी फिल्मों के लिए बहुत मुश्किल से ही फंडिंग मिल पाती है। वहीं उन्होने यह भी कहा कि यह महिलाओं और पुरुषों की लड़ाई जैसा नहीं है, बल्कि उन्हें मिलकर काम करने की ज़रुरत है। **सीमा देसाई** ने अपनी आगामी फिल्म *पप्पू की पगडंडी* के बारे में बात की, वहीं राइटर **ज्योति कपूर** ने बताया कि कैसे उन्हें फिल्म राइटिंग के लिए क्रेडिट नहीं मिला, और उन्हें इसके लिए सुप्रीम कोर्ट तक जाना पड़ा।

शाम 4 से 6 बजे **सिनेमा और समाज: समकालीन सन्दर्भ** संवाद रखा गया, जिसमें मुख्य अतिथि के रूप में हरीदेव जोशी पत्रकारिता एवं जनसंचार विश्वविद्यालय के कुलपति **ओम थानवी** मौजूद रहे। संवाद की अध्यक्षता **प्रो नरेश दाधीच** ने की, वहीं बतौर वक्ता **हरिराम मीणा, राजेन्द्र बोड़ा, ईश मधु तलवार, प्रबोध गोविल ने** अपने विचार रखे। वहीं **डॉ राकेश रायपुरिया और डॉ प्रणु शुक्ला** ने मेहमानों का स्वागत किया। चर्चा में सिनेमा को समाज से जुड़ा एक पात्र बताया। सिनेमा एक ऐसी कला है, जिसमें सभी कलाओं का संगम है,  और यह एक भावनात्मक कला है। उन्होंने बताया कि सिनेमा समाचार पत्रकारिता से ज्यादा प्रभावित है, और लोगो के लिए मनोरंजन का एक अच्छा साधन है। **नरेश दाधीच** ने  सिनेमा से समाज पर पड़ने वाले प्रभाव को भी बताया। उन्होंने *फाइट क्लब* फिल्म का सटीक उदहारण देते हुए बताया कि अमेरिका में एक समय लोगों ने अपने दबाव को दूर करने के करने के लिए कई सारे फाइट क्लब खोले जिससे लोगो को काफी परेशानियां हुई जिसके बाद पुलिस के द्वारा इन क्लब को बंद करवाया गया। इसके अलावा **हरिराम मीणा** ने आदिवासी संस्कृति और समाज के बारे में बात की और बताया कि आने वाले समय में लोगो को आदिवासी संस्कृति को सहेज के रखना होगा। **ओम थानवी** ने बताया कि समाज है तो सिनेमा है और सिनेमा है तो समाज है।

**वी शान्ताराम के फैंस के लिए दिखाई गई मशहूर फिल्म*पड़ौसी***

सोमवार को **वी शान्ताराम के प्रशंसकों के लिए अपने ज़माने की मशहूर फिल्म रही *पड़ौसी* का प्रदर्शन किया गया।** आज के दौर में जिस तरह साम्प्रदायिक भेदभाव और आपसी बैर का माहौल बन रहा है, पड़ौसी को देखना दर्शकों को कई सबक दे जाता है।

वी शांताराम की बहुचर्चित फिल्म *पड़ौसी* [1941] सामाजिक मुद्दों को छूती हुई फिल्म है। इस सोशल ड्रामा फिल्म को ख़ास और आज के वक्त में प्रासंगिक बनाता है इसका विषय, जो हिन्दू – मुस्लिम एकता की बात करता है। दर्शकों ने फिल्म का भरपूर आनंद उठाया।

**हुआ कई फिल्मों का प्रदर्शन**

फिल्म समारोह का चौथा दिन भी फिल्मों से सराबोर रहा। 20 जनवरी को मल्टीपल स्क्रीन्स में फिल्मों का लगातार प्रदर्शन जारी रहा। *मेडिसिन लैम्प्स, दा जोकर, दा नॉट, दा सीक्रेट लाइफ ऑफ फ्रॉग्स, इनटॉलरेंट, चैम्पियन, बरिड सीड्स, हाउसफुल, प्रूफ, मैग्निफिशिएंट, हैप्पी बर्थ डे, हू इज़ माई नेबर, पिक पॉकेटर, मिलीभगत, वर्जिन स्लेव्स फॉर सेल, गॉन आर दा डेज़, दा आर्ट ऑफ डाइंग, मेड इन इंडिया, अपरूटिंग, पार्सल ग्रीड, स्मॉल फिश* आदि फिल्में दिखाई गईं।

फिल्म **ऑड कपल** का प्रदर्शन ख़ास रहा, जिसमें **नवाजुद्दीन सिद्दीकी** ने अभिनय किया है।

ऑस्कर विजेता रही फिल्म **डॉटर, डूबी** को देखना फिल्म प्रेमियों के लिए विशेष अनुभव होगा।

राजस्थानी फिल्म **स्मैश / चीड़ी बल्ला** के प्रदर्शन का दर्शकों ने भरपूर आनन्द उठाया।

**आज शाम 5 होगी क्लोज़िंग अवॉर्ड सेरेमनी**

आज की शाम बहुत ख़ास होगी, चूंकि आज होगी जिफ 2020 की क्लोजिंग सेरेमनी। यहां दुनिया भर के हिस्सों से आई फिल्मों में से चयनित फिल्मों को अवॉर्ड्स दिए जाएंगे।

**शाम पांच बजे आइनॉक्स [ऑडी 1] जी.टी.सेन्ट्रल में क्लोजिंग सेरेमनी आयोजित होगी।**

**मास्टरपीस फिल्म *फॉस्ट – अ रिटर्न फ्रॉम द फ्यूचर* और चीन की फिल्म *सन राइज़ेस फ्रॉम दा ईस्ट पोल* से गिरेगा जिफ 2020 का पर्दा**

मारिया एलेक्सिया के निर्देशन में बनी 1 घण्टे 21 मिनट लम्बी फिल्म ***फॉस्ट – अ रिटर्न फ्रॉम द फ्यूचर*** सिनेमा की दुनिया में एक मास्टरपीस है। जयपुर इंटरनेशनल फिल्म फेस्टिवल की क्लोज़िंग सेरेमनी में दिखाई जाने वाली इस फिल्म का विषय कवि गोथे की महान् रचना *फॉस्ट* पर आधारित है। ग्रीस में बनी यह फिल्म वर्तमान समाज की पड़ताल करती है, वह भी बहुत अनूठे तरीके से। निस्सन्देह निर्देशक मारिया ने विश्व सिनेमा को एक बेहतरीन फिल्म दी है। फिल्म में मुख्य पात्र एक रचनाकार है, जो ज़िंदगी के सच को एक इंसानी दानव से रिश्ते के ज़रिए समझता है। फिल्म का विषय बहुत प्रासंगिक है, जो सभी को जोड़ता है।

चीन की 92 मिनट लम्बी फीचर फिक्शन फिल्म ***सन राइज़ेस फ्रॉम दा ईस्ट पोल***को **फिनिक्स डॉन्ग** ने निर्देशित किया है। फिल्म एक आम लड़की युएयान जू के बारे में है, जो शादी के ठीक एक दिन पहले गायब हो जाती है, जबकि उसका होने वाला पति जिउआन एक सेलिब्रिटी है। राज़ की बात यह है कि युएआन अचानक यूं कहां और क्यूं गायब हो गई?

**बौद्ध धर्म का सार है मेरी कहानी - पताना थाइवैनिच**

फिल्मों के महाकुंभ के इस माहौल में हमारी मुलाकात एक ऐसी ही शख्सियत से हुई, जो कि एक बहुत अच्छी स्क्रीन राइटर हैं।इनका नाम है **पताना थाइवैनिच**, जो थाईलैंड की निवासी और USA में स्क्रीनराईटर हैं। उन्होंने बताया कि वे बौद्ध धर्म से हैं, लेकिन USA में काम करते हुए वे अपने कर्तव्यों को भूल गई थी। अपने कर्तव्यों की तलाश में उन्होंने बौद्ध धर्म की काफी खोज की और इसके आधार पर ही उन्होंने एक स्क्रीन स्टोरी लिखी, जो पाश्चात्य संस्कृति  को बौद्ध धर्म की और अग्रसर करती है। उन्हें उनके नैतिक मूल्यों की जानकारी देती है, और जीवन में अपने लक्ष्य को ढूंढ़ने में मदद करती है।

**गुलाबी नगरी है बहुत पसंद - कोस्टाडिन बोनेव**

जेएफएम में इन्हीं सेशंस के दौर में हमारी मुलाकात ***अपरूटिंग*** एक फीचर डॉक्यूमेंट्री फिल्म है, के निर्देशक कोस्टाडिन बोनेव से हुई। उन्होंने बताया कि यह फिल्म आर्मीनिया, टर्की और बुल्गारिया के इतिहास पर आधारित है। इस फिल्म में आर्मीनिया और बुल्गारिया के बीच हुए विभाजन के दौरान हुए नरसंहार को दर्शाया गया है। इतिहास प्रेमियों को यह फिल्म काफी पसंद आएगी। जिफ के बारे में अपने अनुभव साझा करते हुए उन्होंने बताया कि उन्हें यह काफी पसंद आया और उन्होंने पहले भी इसमें आने के लिए प्रयास किया था। उन्होंने बताया कि जिफ अंतरराष्ट्रीय स्तर पर सभी कलाकारों के लिए अपनी कला दिखाने का एक मौका प्रदान करता है। उन्हें इतिहास काफी पसंद है, इसलिए उन्होंने इससे पहले भी कई फिल्में इतिहास और समकालीन मुद्दों को लेकर बनाई हैं। गुलाबी नगरी की तारीफ करते हुए उन्होंने बताया कि उन्होंने जल महल के बारे में काफी सुना है और वे उसे देखने की इच्छा रखते हैं।

**Hindi Cinema is in danger, Not Regional Cinema - Tigmanshu Dhulia**

**I try to give something good to Society - Rakesh Om Prakash Mehra**

**Film industry is biased towards Women Directors - Pakhi A. Tyrewala**

**Famous Film *Padosi* shown for V Shantaram's Fans**

**Closing Award Ceremony at 5 p.m. today at INOX – G.T. Central**

Jaipur. On the third day of JIFF, at 12 to 1:30 p.m., **Regional Cinema of India - Today and Tomorrow, Diversity of India - Reflection in Indian Cinema** session took place. It included Director and Writer of *Gangs of Wasseypur* and *Paan Singh Tomar* **Tigmanshu Dhulia**, *Bala* writer **Niren Bhatt**, *Lal Kaptan* Writer **Deepak Venkatesan, Indranil Ghosh** while Film Maker **Gajendra Kshotriya** was the Moderator.

The session discussed about the challenges faced in regional cinema, especially Rajasthani and Hindi cinema. In the session **Tigmanshu Dhulia** told clearly that Hindi cinema is in danger, not regional cinema. As regional cinema is rooted in roots, it will never be out. At the same time, taking a pinch, Dhulia also said that the way the films are full of abuses, it is not necessary. Regional languages ​​and dialects have their own color and accent, and there is no need for abuses.

**Niren Bhatt**, who wrote a show like *Taarak Mehta's Ooltah Chashma*, said that Bollywood is becoming more like a pastiche, while regional stories are becoming less. At the same time, all the speakers in the session also said that in the era of digital platforms and web series, new stories will get more space and freedom. Such platforms will inspire filmmakers to make better cinema.

**I try to give something good to Society - Rakesh Om Prakash Mehra**

An important session named **Cinema of Change**, in which well-known Film Director **Rakesh Om Prakash Mehra** interacted with the audience.

**Rakesh Omprakash Mehra** clearly said that Pakistan - Hindustan and communal issues should be gone now, and now we should think beyond this. Mehra said that after hearing painful stories of Partition since childhood, it had a profound effect on him, and it is more or less visible in his films as well. Mehra also said that he was impressed to make good cinema by watching V. Shantaram's films in childhood. In the conversation, Mehra also told about his upcoming film *Udaan.*

**Film industry is biased towards Women Directors - Pakhi A. Tyrewala**

**World Cinema by Women** session was held from 2 to 3 p.m. with *Good News* Film Writer **Jyoti Kapoor**, Director, Cinematographer and Founder of Mumbai Talkies **Seema Desai**, **Tejpal Singh Dhama**, well-known Writer and Director **Pakhi A. Tyrewala** and Filmmaker from Arminia **Marina Libik** put their views forward. **Prerna Sahni** was the Moderator.

At the beginning of the session, **Pakhi A. Tyrewala** stated openly that the film industry has a discriminatory attitude towards women directors, and that they need to work twice as much to stay in this industry. Female film makers rarely get funding for their films. At the same time, she also said that it is not like fighting between women and men, but they need to work together. **Seema Desai** talked about her upcoming film *Pappu Ki Paghadandi*, while Writer **Jyoti Kapoor** told how she did not get credit for film writing, and had to go to the Supreme Court for the same.

**Cinema and Society: Contemporary Context** dialogue was held from 4 to 6 p.m., in which Om Thanvi [Vice Chancellor of Haridev Joshi Journalism and Mass Communication University] was present as the Chief Guest. The dialogue included Prof. Naresh Dadhich, while as a speaker, Prof. Sudesh Batra, Hariram Meena, Rajendra Boda,Prabodh Govil, Dr. Rakesh Raipuria and Dr. Pranu Shukla gave their views.

In the discussion, cinema was described as a character associated with society. Cinema is an art that combines all arts, and is an emotional art. He told that cinema is more influenced by news journalism, and is a good source of entertainment for the people. **Naresh Dadhich** also explained the impact of cinema on society. Giving the exact example of the film *Fight Club*, he said that once in America, people opened a number of fight clubs to overcome their pressure, which caused a lot of problems to the people after which these clubs were closed by the police. Apart from this, **Hariram Meena** talked about tribal culture and society and said that people will have to save tribal culture in the coming time. **Om Thanvi** told that if there is a society there is a cinema and there is a cinema if there is a society.

**Famous Film *Padosi* shown for V Shantaram's Fans**

On Monday, V Shantaram's popular Film *Padosi* was screened. V Shantaram's well-known film *Padosi* [1941] is a film touching social issues. This social drama makes the film special and relevant in today's times, its subject, which speaks of Hindu-Muslim unity. The audience thoroughly enjoyed the film.

**Many Films were screened continuously**

The fourth day of JIFF 2020 was also full of films. On 20th January, films continued to be screened on multiple screens. *Medicine Lamps*, *The Joker, The Knot, The Secret Life of Frogs, Intolerant, Champion, Buried Seeds, Housefull, Proof, Magnificent, Happy Birthday, Who Is My Neighbour, Pick Pocketer, Milibhagat, Virgin Slaves For Sale, Gone Are The Days, The Art of Dying, Made in India, Uprooting, Parcel Grid, Small Fish* etc. were screened.

The screening of the film ***Odd Couple*** was special. Seeing the Oscar winning film ***Daughter, Doobie*** will be a special experience for film lovers. The performance of *Rajasthani* film ***Smash*** / ***Chidi Balla*** was enjoyed by the audience.

**Closing Award Ceremony Today Evening**

This evening will be very special, since today will be the closing ceremony of JIFF 2020. Here, selected films from films from parts of the world will be given awards.

**Closing Ceremony will take place at 5 p.m. in INOX - Audi 1[GT Central].**

**Masterpiece Film *Faust – A Return From the Future* and Chinese Film *Sun Rises From the East Pole* will be the Closing Films of JIFF 2020**

Considered a Masterpiece in the world of Cinema, the film *Faust - A Return from the Future* will be the Closing Film of JIFF 2020, which will be screened on 21st January at INOX Cinema Hall, GT Central.

**Masterpiece Film *Faust – A Return From the Future* to be the Closing Films of JIFF 2020**

Directed by Maria Alexea, 1 hour 21 minutes long film ***Faust - A Return from the Future*** is a masterpiece in the world of cinema. The theme of this film, which would be shown in the closing ceremony of the Jaipur International Film Festival, is based on great Poet Gothe's creation *Faust*. The film explores the current society, that too in a very unique way. Undoubtedly director Maria has given a milestone film to World Cinema. The central character in the film is a creator, who understands the truth of life through a relationship with a human demon. The theme of the film is very relevant, connecting everyone.

Lighting used in the film maintains the mood of the film. The editing of the film also adds to the impact of the film. This film depicts the story through gestures, as the film's theme moves forward with dance steps. The film is solely ‘poetic’ in nature.

***Sun Rises from the East Pole*** is a 92 minutes long Feature Fiction Film from China, directed by Phenoix Dong. Film is about a common girl Yueyan Zhu, who disappears just a day before the wedding. Her future husband is a celebrity that every girl wants to marry. In such a situation, why is Yueyan disappeared?

**My Story is about BUDDHISM - Pattana Thaivanich**

JIFF is a platform which provides the stage to artists, filmmakers, screenwriters, lyricists to showcase their talents internationally. In this ocean of films, we met

Pattana Thaivanich. She is an American with Thai origin. She worked in an MNC in America but was feeling the sense of incompleteness. In search of completeness and found Buddha. She researched about Buddha and wrote this screenplay to help western people to understand the enlightenment and the purpose of life. The story is about Prince Ananda, cousin of Buddha. He is the one who brought women into monkhood. Buddhism monkhood is there is no inequality, no castes. According to her, this story has the essence of Buddhism. She told what is‘Enlightenment’, What is reality of life and What is the ultimate truth.

**I Like Pink City so much - Kostadin Bonev**

During the sessions of JFM we met the director of ***Uprooting.***It is a story which depicts the problems of contemporary history. Bulgarian director **Kostadin Bonev** brought a documentary feature to JIFF. Genocide is a world problem which he tried to showcase in his film. He showcased the pain of genocide during the partition of Armenia and Bulgaria.  It's about history of Bulgaria, Armenia and Turkey. History lovers liked this movie. About sharing his experience at JIFF he got so happy to visit to JIFF. He tried last year too but this year his film got selected. He likes that JIFF is open to all artists of cinema around the globe. Selection of the films is interesting. Because he has special interest in history that's why earlier also he made so many documentary movies based on contemporary history and it's problems. While appreciating the pink city he wants see Jal Mahal.

**FOR MORE–** [**www.jaipurfilmmarket.org**](http://www.jaipurfilmmarket.org)

**FOR MORE–** [**www.jiffindia.org**](http://www.jiffindia.org)

**Rajendra Boda**

Spokesperson – Jaipur International Film Festival – JIFF Mobile: +91-9829051075

Hanu Roj Founder Director +91-9828934481

**RSVP: Ms. Nivedita Sharma: 9460146506**

**Off: +91-141-4055263 Mob: +91-8003937961 Website:** [www.jiffindia.org](http://www.jiffindia.org)